एक मधुमक्खी और एक गुलाब

पीटर डीरोज़ा

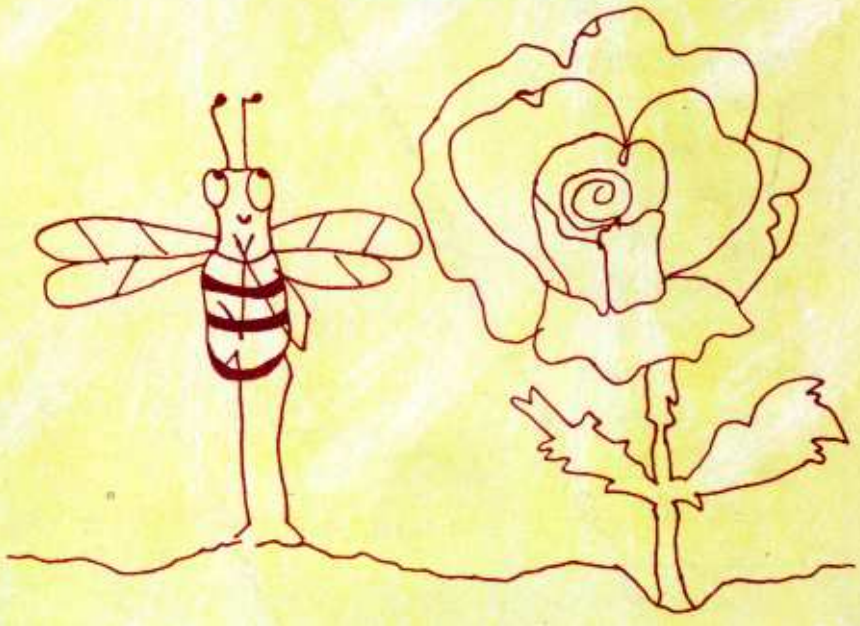

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

एक मधुमक्खी और एक गुलाब : पीटर डीरोज़ा
The Bee and the Rose : Peter Derosa
अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन: दुलारी
(पीटर डीरोज़ा के मूल चित्रों पर आधारित)
ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष : 1999, 2000, 2002,
2003, 2004

Price : 10 Rupees
मूल्य: 10 रुपए

Published by Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net

एक मधुमक्खी और एक गुलाब

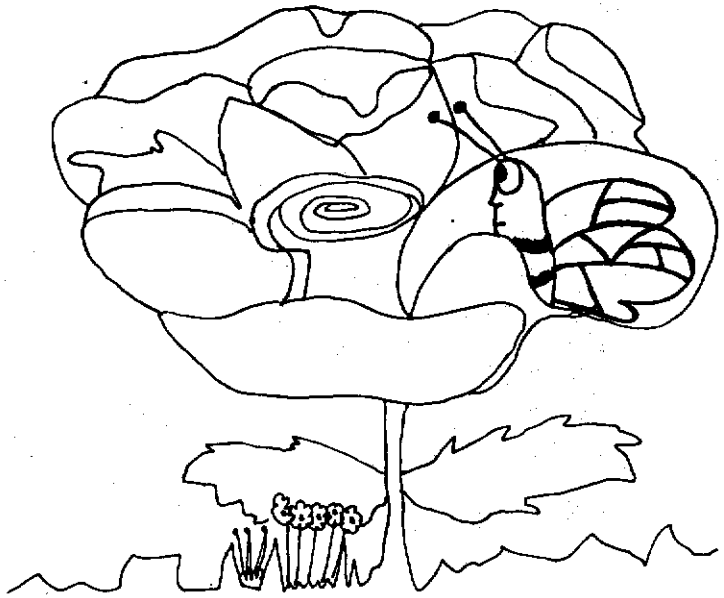

पीटर डीरोज़ा

एक मधुमक्खी और एक गुलाब

बॉबी एक मधुमक्खी था। वसंत में ही तो बॉबी संसार में आया था। उसे शुरू में तो अपना मधुमक्खी का छत्ता बहुत अच्छा लगा। सचमुच, उसे अपने छत्ते पर गर्व था। उसे किसी ने बताया था – यह याद नहीं कि किसने, कि वा एक गुलाम मधुमक्खी की हैसिययत से पैदा हुआ था। उसका काम अलग–अलग फू लों पर जाकर उनके पराग के कणों को इकट्ठा करना था। इसी पराग पर ही छत्ते के अविकसित अंडे पलेंगे और इसी से ही स्वादिष्ट शहद बनेगा।

उसे याद है जब वह पहली बार छत्ते से बाहर निकला था तो वह कितना खुश था। अप्रैल का महीना था और दूब की घास पर ओस की बूंदें मोतियों की तरह चमक रहीं थीं।

जब वह अपने नाज़ुक पंखों को धूप में सुखा रहा था तो छत्ते के दरवाज़े की सुरक्षा के लिए तैनात एक मोटी सी मधुमक्खी ने उससे कहा, ''नंबर 15/753 एक बात हमेशा याद रखना। तुम्हारी ज़िंदगी बहुत छोटी है। इसलिए हमेशा उपयोगी काम करना।''

उस समय उसका नाम बॉबी नहीं था। मैं बाद में बताऊंगा कि उसका यह नाम कैसे पड़ा। जब वह पैदा हुआ तो उसे सिर्फ एक नंबर दिया गया था। क्योंकि छत्ते में पैदा होने वाले अंडों में उसकी गिनती 15,753 थी, इसलिए उसका नाम 15/753 पड़ गया।

सुबह को कुछ खोजी मधुमक्खियां एक अच्छी खबर लेकर आईं। पास के खेत के कोने में कुछ झाड़ियां थीं जिनपर खुशबूदार पीले फूलों के गुच्छे लगे थे। अब सब का ध्यान उन्हीं फूलों पर था।

बॉबी ने सोचा कि उसे भी निर्देश अच्छी तरह याद होने चाहिए और उसे अपना काम मुस्तैदी से करना चाहिए। ज़िंदगी बहुत छोटी है। इसलिए उसे उपयोगी होना चाहिए। वह बार–बार इसी मंत्र को दोहराता, ''मुझे उपयोगी होना चाहिए।''

उसे उन फूलों की झाड़ियों में भेजा गया। उसका पेट पराग के कणों से एकदम फूल गया था। इतना सारा पराग इकट्ठा करके वह बहुत खुश था। वह खुद अपने पेट का मालिक नहीं था। उसके पेट का असली मालिक तो मधुमक्खी का छत्ता था। वापिस जाकर उसे अपने पेट के सारे पराग को छत्ते में ही खाली करना था।

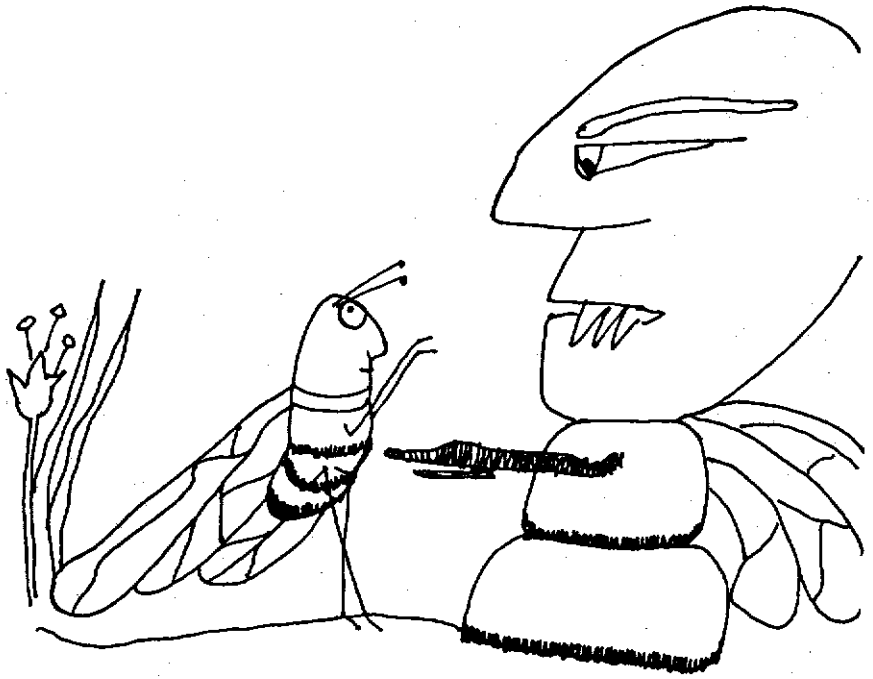

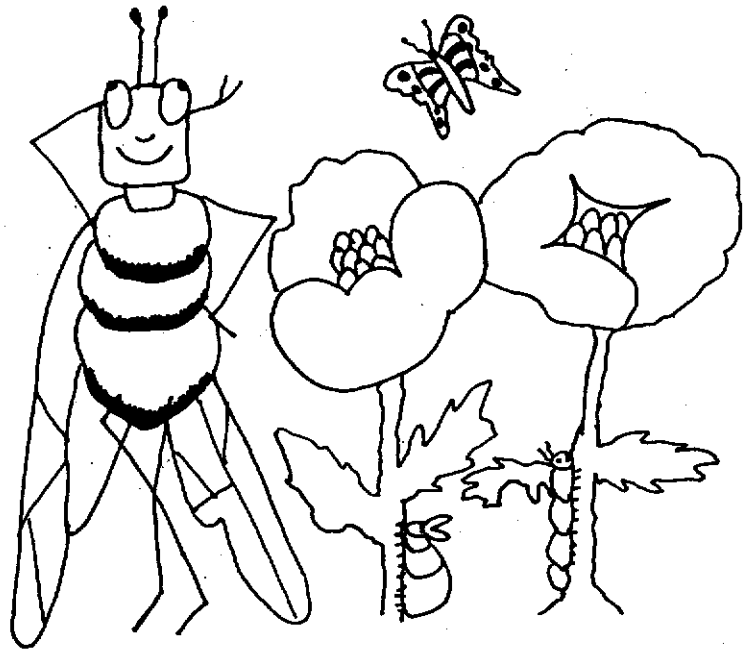

"15/753 हाज़िर है," उसने छत्ते के दरबान से आकर कहा। दरबान एक रजिस्टर में कुछ लिख रहा था।

"तुम कितने फूलों का पराग चुन कर लाए हो," दरबान ने ज़ोर की आवाज़ में पूछा।

"करीब सौ का," उसने अपना सिर उठा कर जोशीली आवाज़ में जवाब दिया।

"करीब!" दरबान ज़ोर से चिल्लाया। "यह करीब क्या बला है! मुझे एकदम सही संख्या बताओ। मुझे लगता है कि 15/753 तुम अपनी ड्यूटी ठीक तरीके से नहीं कर रहे हो।"

"मुझे लगता है कि..... "

"सोचो मत नंबर 15/753 । सोचने से भला कभी किसी का फायदा हुआ है। इस तरह तुम सीधे खड्डे में जाओगे। सुनो यहां का पहला नियम है – करो! सोचो मत!"

"अगली बार मैं इसका ध्यान रखूंगा," बॉबी बुदबुदाया।

"अगली बार नहीं अभी से ही इस नियम को गांठ बांध लो," दरबान गुर्राया, "चलो पराग को वहां झटपट खाली करो और अगले घंटे में 210 फूलों का पराग चुन कर लाओ।"

इस तरह मधुमक्खी के छत्ते में बॉबी की ट्रेनिंग शुरू हुई।

हम यह न भूलें कि वो अप्रैल का महीना था। अभी पौधों पर केवल छोटी–छोटी कलियां ही लगीं थीं। फूल बहुत कम थे। जब फूल इतने कम हों, ऐसे मौसम में 210 फूलों का पराग चुन कर लाना कोई आसान काम नहीं था। पर मैं आपको बताना चाहता हूं कि बॉबी ने अथक परिश्रम करके इस असंभव काम को पूरा किया। दरबान ने इसके लिए बॉबी को कोई शाबाशी नहीं दी। बॉबी से पराग को एक बड़े से बर्तन में डाल कर दुबारा जाने को कहा गया। उसे बीच में चाय पीने तक की छुट्टी नहीं मिली।

बस रात को उसे कुछ आराम मिला। दिन भर की साफ हवा और धूप के बाद अब छत्ते के अंदर उसे घुटन और अंधेरा लग रहा था। परंतु बॉबी को करीने से रखे अपने इस घर पर बहुत गर्व था।

हरेक मधुमक्खी को छत्ते में कोई खास काम करना होता है। कुछ ठंडी रात के समय अपने पंखों को तेज़ी से हिलाते रहते हैं जिससे कि शहद से चिपका हुआ पानी सूख जाए। कुछ छत्ते की सफाई करते हैं और कचरे को इकट्ठा करके बाहर फेंक देते हैं। कुछ का काम छत्ते

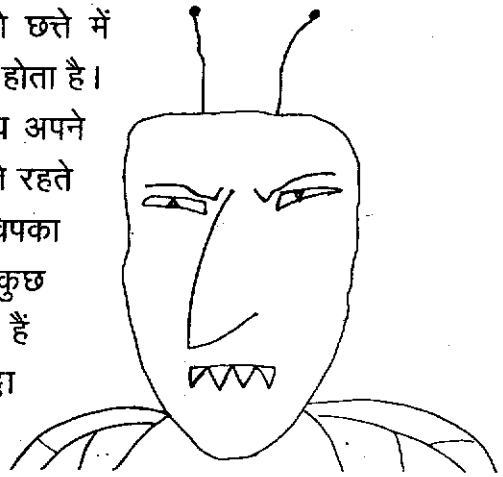

की टूट–फूट ठीक करना और मरम्मत करना होता है। और छत्ते के अंदर सबकी आंखों से दूर होता है महारानी मधुमक्खी का पवित्र महल।

हरेक मधुमक्खी का जीवन में केवल एक ही उद्देश्य होता है – ***उपयोगी होना*** । इसी तरह की दिनचर्या के कारण ही मधुमक्खी के छत्ते में शांतिपूर्वक काम चलता रहता है।

एक दिन बॉबी दूर स्थित एक फूलों के बगीचे की यात्रा पर था। उसके साथ में 19/201 भी था। दोनों मक्खियों में दोस्ती नहीं थी। छत्ते में दोस्ती करने पर पूरी तरह पाबंदी थी। परंतु इन दोनों ने तीन हफ्ते, बिना इतवार की छुट्टी लिए साथ–साथ काम किया था।

यात्रा के दौरान 19/201 के एक पैर में कांटा चुभने से चोट लग गई थी और उसका एक पंख थोड़ा सा मुड़ गया था। इस कारण उससे पराग का भार नहीं उठाया जा रहा था। छत्ते की ओर उड़ते हुए बॉबी ने उसका काफी बोझ खुद ढोया। बॉबी को नहीं पता कि उसने खुद ऐसा क्यों किया। मदद करने के पीछे उसकी मंशा साफ थी। उसे 19/201 की हालत पर कुछ तरस आ रहा था। इसलिए उसने मदद की थी। परंतु छत्ते में, किसी पर तरस खाना जैसी भावनाएं रखने पर कड़ी मनाई थी। इस प्रकार की भावुकता से छत्ते के काम में बाधा पड़ सकती थी। और अगर छत्ते में सही तरह से काम नहीं होगा तो उसका भविष्य अंधकारमय हो जाएगा।

"19/201," दरवाज़े पर खड़ा दरबान चिल्लाया, "तुम बाहर ही खड़े रहो!" दरबान की नाक के सामने के दोनों लंबे बाल अब सींग की तरह खड़े हो गए थे। दरबान बाहर खड़े 19/201 को ऐसे देख रहा था जैसे कि वो कोई चोर, भिखारी या फिर दुश्मन हो।

19/201 ने दुबारा गिड़गिड़ा कर दरवाज़े के अंदर आने की अनुमति मांगी।

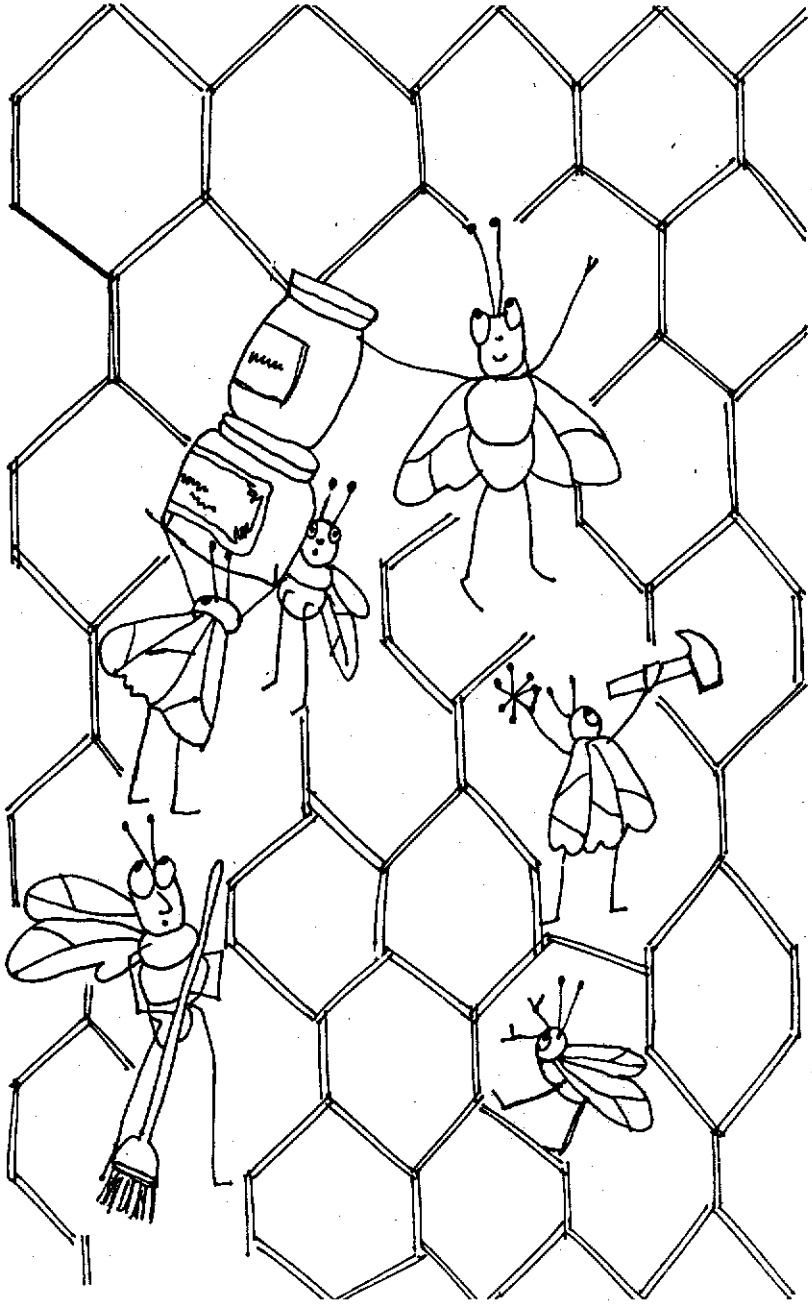

''मैं तुम्हें अंदर आने की इज़ाज़त नहीं दे सकता हूं। तुमने जो भी किया है वो नियम–कानून के खिलाफ है।''

''किसके नियम के खिलाफ,'' दर्द से कराहते हुए 19/201 ने पूछने की ज़ुर्रत की। अगर उसके शरीर में इतना दर्द नहीं हो रहा होता तो वह ऐसा देशद्रोही प्रश्न पूछने की हिमाकत ही न करता।

दरबान ने सवाल को अनसुना कर दिया। उसने दुबारा वही वाक्य दोहराया, ''यह नियम–कानून के खिलाफ है।'' दरबान नियम–कानून को सख्ती से लागू करके छत्ते के प्रति अपनी वफ़ादारी निभा रहा था। दरबान को इतनी ईमानदारी से अपनी ड्यूटी निभाते हुए देख कर बॉबी को अपने छत्ते पर बेहद गर्व हुआ।

जब 19/201 ने दरवाज़े में से ज़बरदस्ती घुसने की कोशिश की तो दरबान ने फौरन सिपाहियों की पलटन को बुलवाकर उसे पकड़वाया और छत्ते के बाहर फिंकवा दिया।

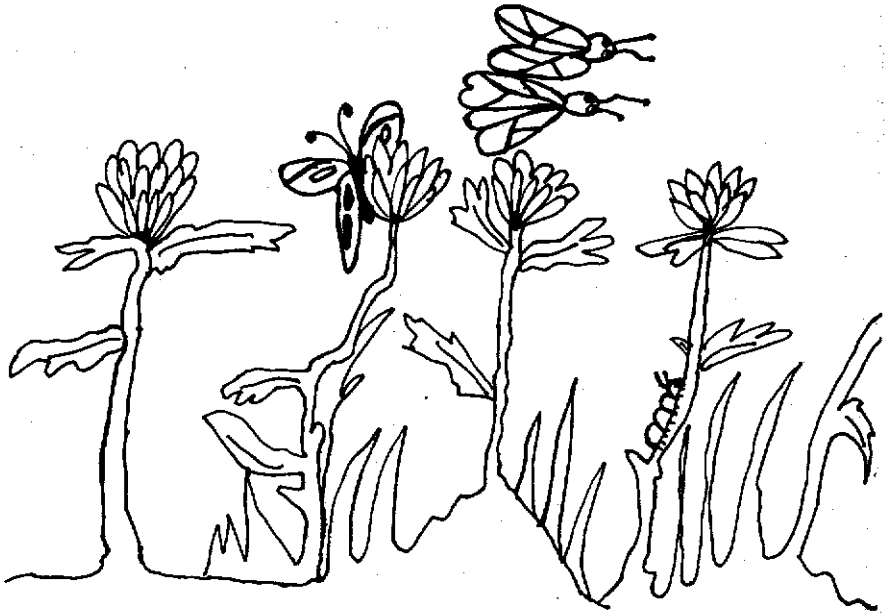

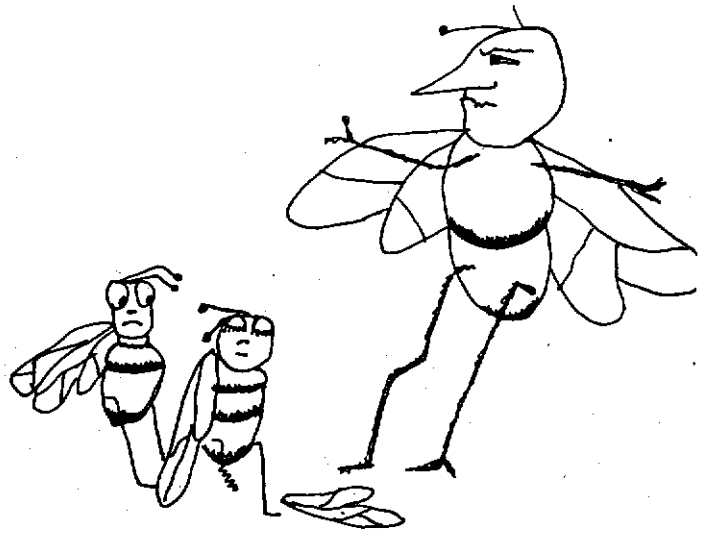

''नियम–कानून के अनुसार,'' दरबान ने बिनी किसी दुख या भावुकता के साथ कहा, ''किसी भी चोट लगी मधुमक्खी को छत्ते में लौटने नहीं दिया जा सकता है।'' फिर दरबान ने बॉबी की ओर देखते हुए कहा ''15/753, मैंने तुम्हें 19/201 की मदद करते हुए देखा है।''

''आप ठीक कहते हैं श्रीमान,'' बॉबी ने कहा, ''मेरा ध्यान तो सिर्फ 19/201 के पराग की तरफ था। मुझे लगा कि इतने सारे पराग का बेकार जाना बहुत शर्मनाक बात होगी।'' बॉबी को खुद पता नहीं था कि वो सच बोल रहा था या नहीं।

''नियम–कानून को तोड़ने से बुरा और कुछ नहीं हो सकता है,'' दरबान ने कहा।

''श्रीमान, ऐसी गल्ती मैं दुबारा कभी नहीं करूंगा,'' बॉबी ने कांपते हुए कहा।

दरबान ने बॉबी को कांपते हुए देखा तो उसने कहा, ''क्या तुम्हें

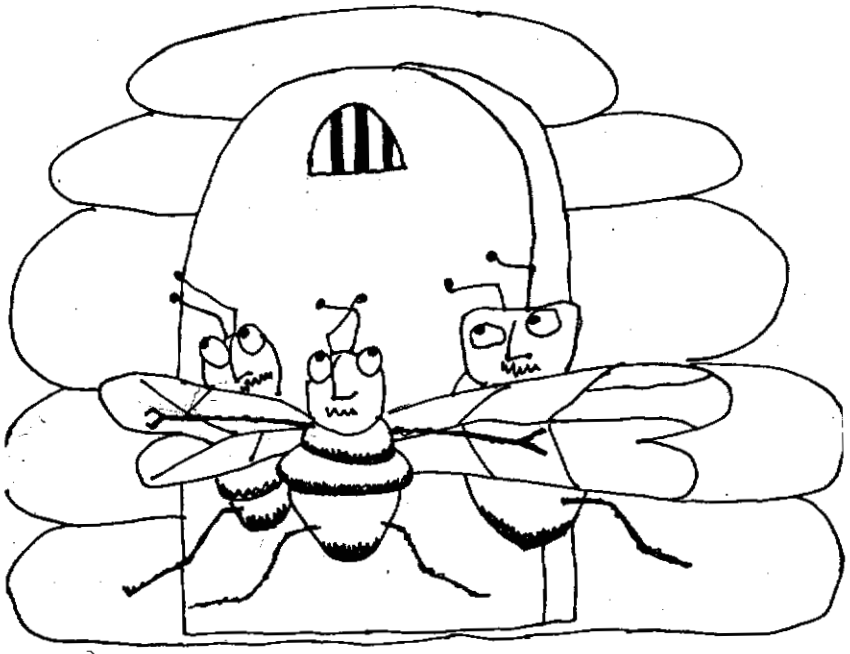

डर लग रहा है 15/753 ।''

''सच बात तो यह है श्रीमान कि लौटते समय मुझे बहुत पसीना आया था। दरवाज़े के अंदर जाते समय मुझे कुछ ठंड जैसी लगने लगी और उसकी वज़ह से ही मैं कांपने लगा।''

''सब भावनाओं को थूक दो,'' दरबान ने कहा। ''भावनाओं में खतरा है। अपने दिल को निर्मल साफ रखो और फिर तुम्हें कभी भी डर नहीं लगेगा। ईमानदारी और निष्ठा से काम करो और छत्ते के लिए उपयोगी बनो।''

बॉबी ने यह सब करने की कसम खाई और अपने पराग के थैले को खाली करा। फिर बहुत संभाल कर, 19/201 की कराहों और चीखों को अनदेखा करते हुए उसने दुबारा फूलों से पराग लाने के

लिए एक सीधी रेखा में उड़ान भरी।

मुझे 19/201 के बारे में बिल्कुल भी नहीं सोचना चाहिए उसने अपने आप से कहा। नियम–कानून बने हैं तो ठीक ही होंगे। इन नियम–कानूनों की बदौलत ही हम सैकड़ों सालों से ज़िंदा रह पाए हैं। अगर हम इन नियम–कानूनों का एक बार भी उल्लंघन करेंगे तो उसके नतीज़े को..... सोच पाना भी खौफनाक होगा। बॉबी अब वह कर रहा था जो पूरी तरह से मना था – बॉबी सोच रहा था। सोचना भी शायद उपयोगी हो सकता है, वो अपने आप से कह रहा था।

बॉबी को उसके बाद से 19/201 कभी भी दिखाई नहीं पड़ा। बॉबी को डर था कि कहीं उसे 19/201 की थोड़ी–बहुत याद न सताए। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। क्या किसी की याद आना गलत बात है? जब इतने सारे नियम तुम्हें बार–बार एक ही रास्ते की ओर धकेलें तो फिर गलती करना काफी मुमकिन था।

अप्रैल का महीना बीत गया। धंधे के लिहाज़ से यह महीना अच्छा बीता। हज़ारों छोटे डिब्बों और कनस्तरों में शहद भरा गया। बॉबी के मन में बार–बार एक सवाल उठता था, पर वो उसे वहीं पर दबा देता था। सवाल था – कि यह सब क्यों, किसके लिए? उसे मालूम था कि उसकी ज़रूरतें काफी थोड़ी थीं – दो या चार फूलों के पराग–कणों से उसका काम आराम से चल जाता। उसकी समझ में यह बिल्कुल भी नहीं आ रहा था कि उसका कोटा अब बढ़ा कर 250 फूल प्रति घंटा क्यों कर दिया गया था?

मधुमक्खी के छत्ते के अंदर की दीवारों के बीच में खूबसूरत सुनहरे गलियारे थे। उन्हें होशियार आर्किटेक्टों और इंजीनियरों की बड़ी फौज़ ने बड़े करीने से बनाया था। ज्यामिति की दृष्टि से तो छत्ता एकदम लाजवाब था – एक अजूबा था। बॉबी को सोचते हुए भी शर्म आ रही थी कि – क्या इन नियम–कानूनों को कभी–कभार, थोड़ा–

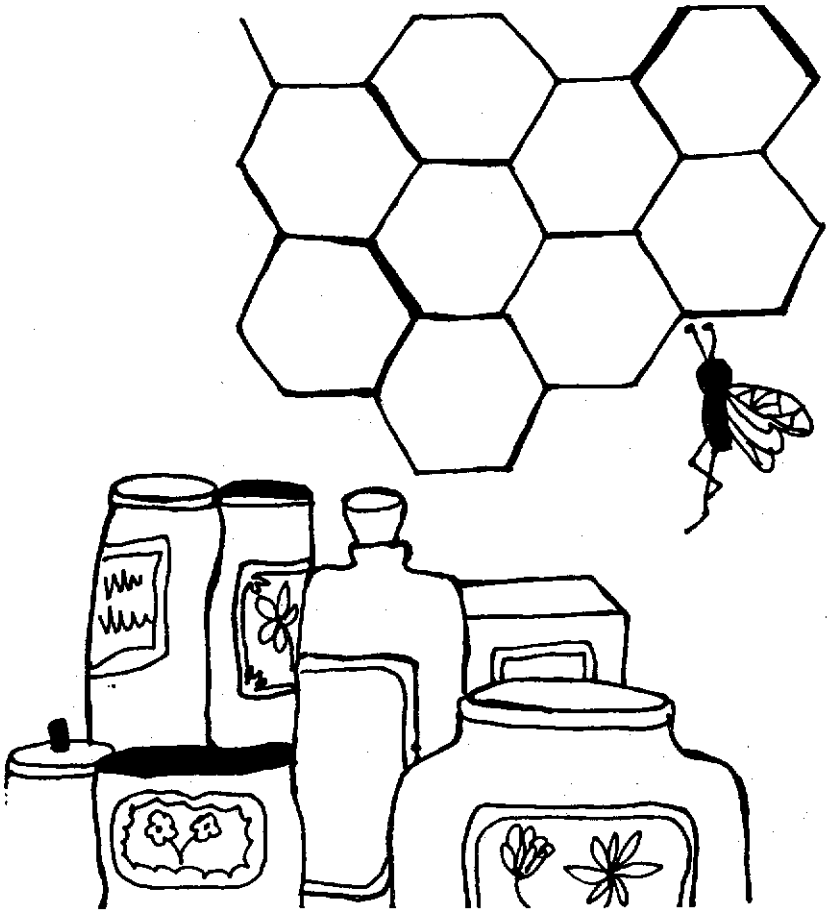

बहुत बदला जा सकता है?

मई और जून के महीनों में इतना भीषण जाड़ा पड़ा कि ठंड के कारण बहुत से मेहनतकश गुलाम मारे गए। किसी ने भी मरे हुए साथियों को दफनाने की कोशिश नहीं की। मरी मधुमक्खियों की लाशों का एक ढेर पड़ा–पड़ा सूख गया और उन्हें चींटियां नोच–नोच कर खाने लगीं।

जो मर गए उनके लिए रोने से क्या फायदा, गह तो बॉबी को पता

था। वो खुद अकेले न तो शवों को पत्तों से ढंक सकता था और न ही उनकी याद में कोई मज़ार बना सकता था। छत्ते के नियम–कानून में मरी मधुमक्खियों के दफनाने का कोई प्रावधान न था। और अगर नियम–कानून बने हैं तो वे ठीक ही होंगे? अगर तुम मधुमक्खी हो तो तुम्हें उनके नियम–कानूनों को मानना ही पड़ेगा। और अगर तुमने मधुमक्खी के रूप में जन्म लिया है तो फिर तुम मधुमक्खी के अलावा और बन ही क्या सकते हो?

जुलाई की एक अलसाई शाम। उड़ते–उड़ते बॉबी सीधे एक खूबसूरत लाल गुलाब पर पहुंचा।

"क्या मैंने तुम्हें अंदर आने की अनुमति दी," अंदर से एक चहकती आवाज़ आई।

कोई फूल बॉबी से ज़ुबान लड़ाए। इसकी आदत बॉबी को नहीं थी।

"मैंने तुम से एक सवाल पूछा था," चहकती आवाज़ ने दुबारा कहा। अब बॉबी को लगा कि वह गुलाब का फूल ही उससे बात कर रहा था।

"माफ करें मुझे," बॉबी ने कहा, "परंतु गुलाब के फूलों ने पहले कभी भी इस तरह की आपत्ति नहीं उठाई है।

"हो सकता है कि यह तुम्हारा पहला अनुभव हो।"

"मालूम नहीं इस सब के बारे में दरबान क्या कहेगा," बॉबी ने परेशान होते हुए कहा।

बॉबी अच्छा–खासा परेशान लग रहा था। गुलाब के फूल ने उसे खुश करने के लिए कहा, "चलो कोई बात नहीं। अच्छा यह तो बताओ कि तुम्हारा नाम क्या है?"

"मैं 15/753 हूं।"

"यह भी भला कोई नाम है," गुलाब ने कहा, "यह तो बस एक

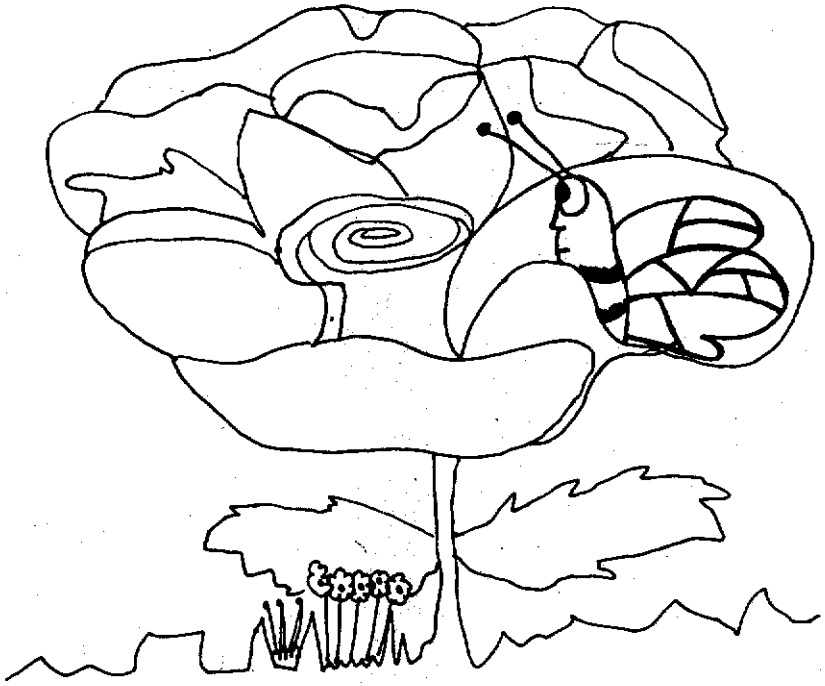

नंबर है।''

''मेरा केवल यही नाम है,'' बॉबी ने उदास स्वर में कहा।

''अच्छा फिर मैं तुम्हें बॉबी कह कर बुलाऊंगी।''

बॉबी ने कहा, ''आप कृपा ऐसा नहीं करें।''

''और देखो मेरा नाम रोज़ा है।''

''आप ऐसा न करें रोज़ा,'' बॉबी ने अपनी बात दोहराई। असल में तो बॉबी, फूल का सुंदर नाम सुन कर ही उस पर मोहित हो गया था।

''मैं ऐसा क्यों नहीं करूं?'' रोज़ा ने पूछा।

''क्योंकि यह नियम–कानून के खिलाफ है।''

''किसने बनाए हैं ये बेहूदे नियम–कानून, बॉबी?''

''आप मुझे 15/753 कह कर बुलाएं।''

''मैं ऐसा बिल्कुल भी नहीं करूंगी।''

बॉबी देख सकता था कि उसके कहने से रोज़ा अपना दिमाग नहीं बदलेगी।

''मैं अब चलता हूं,'' बॉबी ने कहा, ''नहीं तो दरबान.... ।''

''यह दरबान कोई बहुत ज़ालिम किस्म का आदमी लगता है,'' रोज़ा ने हंसते हुए उसे बीच में टोका। परंतु हंसी के रुकने से पहले ही बॉबी अपने छत्ते की ओर कूच कर चुका था।

बड़ी ग़ज़ब की इंसान लगती है यह रोज़ा, उसने अपने आप से कहा। पहले वह चाहती है कि मैं उससे अनुमति मांगू वह काम करने की जिसकी इज़ाज़त नियम–कानूनों ने मुझे दी है। फिर वह नियम–कानूनों का मज़ाक उड़ाती है और हमारे वफ़ादार दरबान को ज़ालिम करार देती है।

बॉबी एकदम चुप्पी साधे था पर उसे अपने दिल की गहराईयों में रोज़ा का दिया हुआ नाम पसंद आया था। पर रोज़ा द्वारा कही हुई कुछ बातें उसे परेशान भी कर रहीं थीं। खैर छोड़ो, रोज़ा ने जो बातें

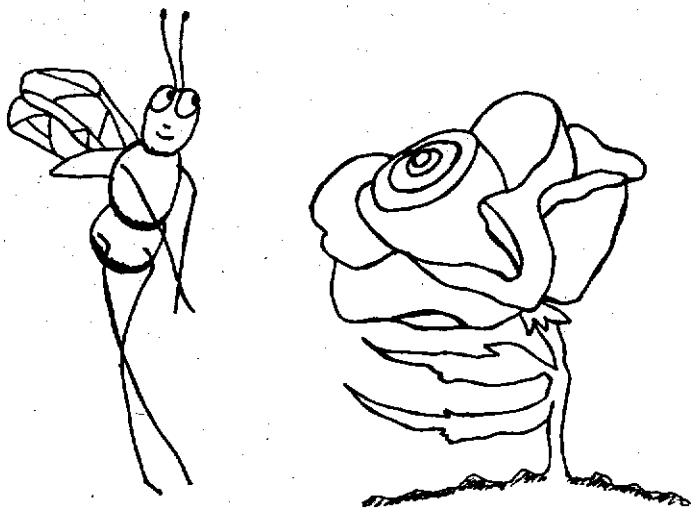

उससे कहीं थीं, वह उन्हें खुद भी अपने आप से कहना चाह रहा था।

अगली सुबह बॉबी सीधा उसी गुलाब के पौधे पर उड़ता हुआ गया, जहां रोज़ा थी। इससे पहले कि वो अपना मुंह खोलता और कुछ बोलता रोज़ा ने कहा:

''अगर तुम्हारी मर्ज़ी हो तो अंदर आ जाओ। वैसे मैं तुम से कई बातें पूछना चाहती हूं।''

बॉबी शर्माते हुए अंदर घुसा।

''क्या किसी दिन तुम्हारी छुट्टी होती है?''

''नहीं तो,'' बॉबी ने उत्तर दिया।

''क्या इतवार वाले दिन और छुट्टियों वाले दिन भी तुम्हें अवकाश नहीं मिलता है?''

''नहीं।''

''तुम्हें देख कर मुझे ऐसा लगता है,'' रोज़ा ने कहा, ''जैसे तुम कोई गुलाम हो।''

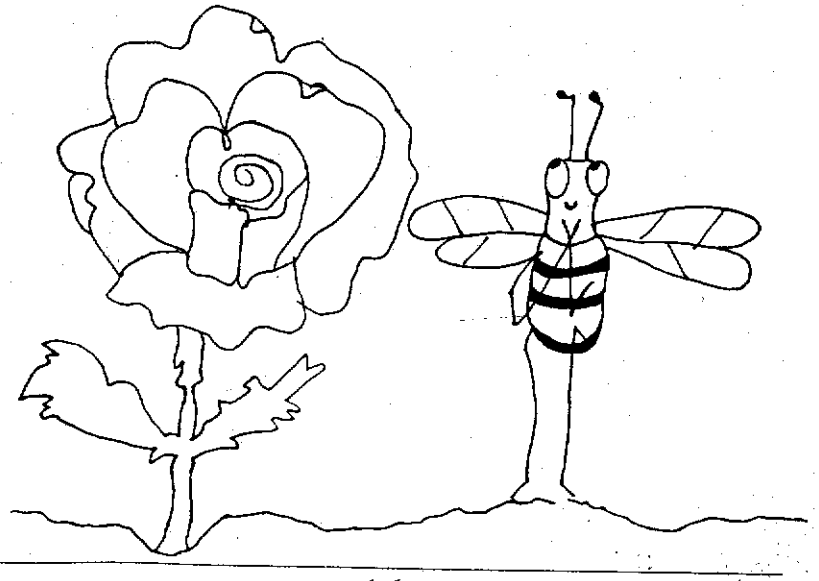

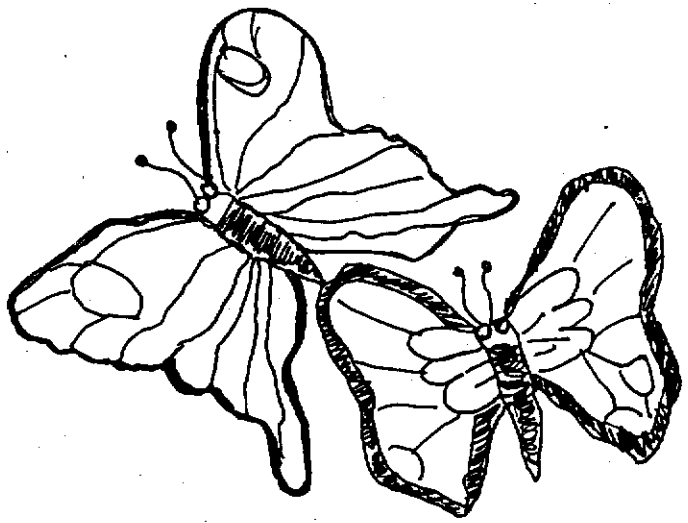

''देखो, अब मैं चलता हूं,'' बॉबी ने कहा।

''तुमसे अपनी सच्चाई बर्दाश्त नहीं हो रही है,'' रोज़ा ने प्यार से कहा।

''अच्छा यह बताओ कि तुम हमेशा एक सीधी लाइन में ही क्यों उड़ते हो?''

''क्योंकि कहीं पर भी जाने का यही सबसे छोटा रास्ता होता है।''

''तुम सबसे लंबे रास्ते से होकर क्यों नहीं जाते?''

''परंतु अगर रास्ता छोटा है तो लंबे रास्ते से होकर जाना एकदम मूर्खता होगी।''

''यही तो तुम्हारी गल्ती है बॉबी,'' रोज़ा ने ज़ोर देकर कहा, ''क्या तुमने कभी तितलियों को नहीं देखा है? तुम उनकी तरह चिंता मुक्त क्यों नहीं हो सकते? तितलियां इधर–उधर मंडराती हैं – कभी आगे जाती हैं कभी पीछे। तुमने देखा होगा कि ऐसा करने में उन्हें कितना आनंद आता है।''

''यह आनंद क्या चीज़ होती है?'' बॉबी ने पूछा।

''जब तुम किसी चीज़ को और किसी वज़ह से नहीं, परंतु सिर्फ अपने मज़े के लिए करते हो तो उसे आनंद कहते हैं।''

''अगर हम मज़ा करने के लिए कहीं रुक गए तो फिर हम शहद कैसे इकट्ठा करेंगे?'' बॉबी ने पूछा।

''बॉबी पहले तुम मेरे एक सवाल का जवाब दो,'' रोज़ा ने पूछा ''तुम यह सब शहद क्यों इकट्ठा कर रहे हो?''

''क्योंकि नियमों के अनुसार हमें ऐसा ही करना चाहिए।''

''और इन नियमों के पीछे क्या कारण है?''

''इन नियमों के पीछे ज़रूर कोई कारण होगा। पर शायद जिसने यह नियम बनाए हैं वही उसे समझता होगा।''

''यह बात सच्ची नहीं लगती,'' रोज़ा ने कहा, ''मैंने सुना है कि जब छत्ता पूरी तरह शहद से भर जाता है तब सब मधुमक्खियों का हुजूम उसे छोड़ कर किसी दूसरे छत्ते को तलाशने के लिए उड़ जाता है। और दुबारा से एक बार फिर वही नीरस और सूनी ज़िंदगी शुरू होती है। यह सब बकवास है।''

''तुम मेरी मान्यताओं को और मेरे विश्वास पर चोट पहुंचा रही हो,'' बॉबी ने गुस्सा होकर कहा। तभी उसे दरबान की बात याद आई। उसने कहा था कि अगर उसका दिल निर्मल होगा तो उसे कभी भी गुस्सा नहीं आएगा। शायद उसे रोज़ा की बातों में कुछ रास आ रहा था।''

रोज़ा पूछ रही थी, ''जिस नियम–कानून का तुम पालन करते हो, उन्हें आखिर कौन बनाता है?''

''मुझे नहीं पता,'' बॉबी ने कहा, ''पर जिसने भी यह नियम–कानून बनाए होंगे वो बड़ा सयाना होगा क्योंकि छत्ते में सब कुछ हमेशा अच्छी

तरह से चलता है।''

''क्या वहां का कारोबार हमेशा एक जैसे ही ढर्रे पर ही चलता है?''

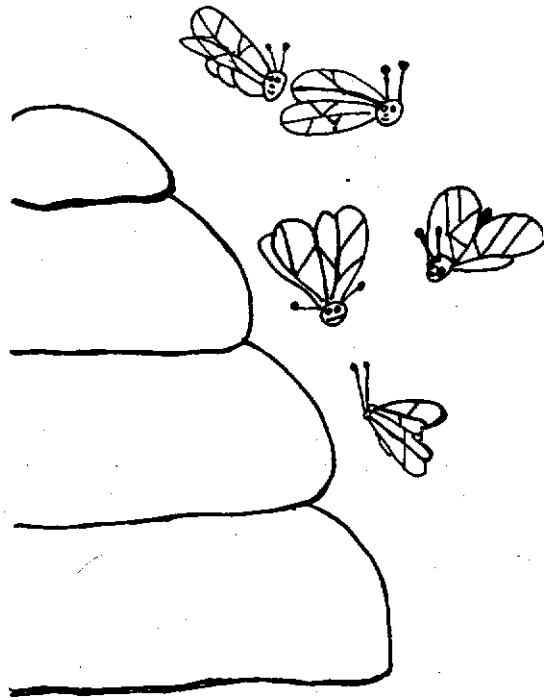

''हां, वहां का काम हमेशा से एक ही तरीके से चलता आया है।''

''नहीं,'' रोज़ा ने कहा, ''अगर हर चीज़ हमेशा एक सी रहती है तो फिर उसमें सुधार की कोई गुंजाइश ही नहीं रह जाती है। है न ठीक?''

''परंतु यह इसलिए होता है क्योंकि उसमें हरेक चीज़ एकदम ठीक है।''

''बॉबी मुझे यह बात यकीन करने लायक नहीं लगती।''

बॉबी के हृदय में अविश्वास की चिंगारियां सुलग रहीं थीं। उन्हें बुझाने के लिए वह चिल्लाया, ''पर मुझे इसमें यकीन है,'' और फिर वो तुरंत दूसरे फूल पर उड़ गया।

बॉबी जिन चीज़ों पर विश्वास करता चला आ रहा था वह अब उसे खोखली लगने लगीं थीं। क्या चोट लगी मधुमक्खियों को, छत्ते में वापिस नहीं घुसने देने में बड़ी सुंदरता है? क्या मरे हुए साथियों को नहीं दफ़नाने में बहुत महान बड़प्पन है? क्या आराम न करना, छुट्टी न लेना, मज़ा नहीं करना बड़ी महान बात है? क्या एक अंधेरी और काली कोठरी में एक–साथ सैकड़ों मधुमक्खियों का रहना एक महान

सभ्यता की निशानी है?

सवाल : बॉबी के पास अब सवालों का अम्बार था।

बॉबी जब काम के बाद छत्ते में वापिस पहुंचा और उसने बताया कि वह केवल 120 फूलों का पराग ही जमा कर पाया है, तो उसे कामचोरी के लिए मधुमक्खियों के मुखिया के पास भेज दिया गया। मुखिया सबसे मेहनतकश था और देखने में भी काफी खौफनाक था।

"यह बताओ 15/753, कि आखिर तुम कहां गए थे?"

"मैं खुद नहीं जानता," बॉबी ने उत्तर दिया।

"जानने की कोशिश भी न करो नंबर 15/753। इसमें जानने और समझने के लिए कुछ है हीं नहीं। बस जो काम तुम्हारे ज़िम्मे है उसे करते रहो। भविष्य तुम्हारी वफ़ादारी पर निर्भित है। और कभी भी प्रश्न मत पूछो। इस छोटे से शब्द "क्यों" ने न जाने कितनी बड़ी–बड़ी सम्यताएं नष्ट की हैं।"

बॉबी ने अपनी सहमति व्यक्त की। मुखिया के भाषण ने उसके डगमगाते विश्वास को दुबारा पुख्ता करने का काम किया था। मुखिया ने जब बॉबी की आंखों में चमक देखी तो उसे चैन आया।

मुखिया ने कहा, "सुनो 15/753, सबसे बड़ी समझदारी इसी में है कि कभी भी सवाल मत पूछो। क्योंकि अगर तुम सवाल पूछना शुरू करोगे तो कभी–न–कभी तो गल्ती करोगे ही। और फिर मालूम नहीं कौन सी गल्ती घातक सिद्ध हो जाए। अच्छा तुम अब जाओ। और दुबारा ऐसी स्थिति मत आने दो।"

अगले घंटे में बॉबी ने 323 फूलों का पराग चुना। उसने सबसे अधिक पराग चुनने का एक नया रिकार्ड कायम किया जिसे कि छत्ते के रजिस्टर में दर्ज़ किया गया। वह खुश था कि मधुमक्खियों की परंपराओं में उसका विश्वास अभी डिगा नहीं था। मुखिया मक्खी तक

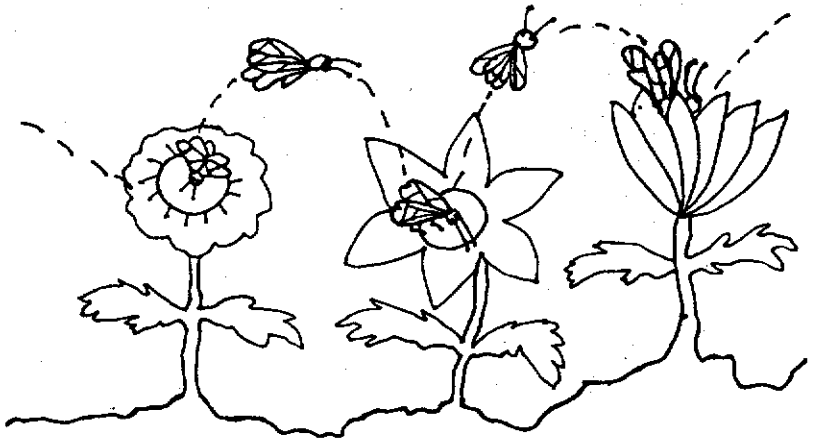

को उसकी काबलियत पर इतना ऐतबार था। ऐसे में अगर वह खुद अपने आप पर शक करे, तो यह पागलपन ही होगा।

एक पूरे हफ्ते तक वो रोज़ा से दूर रहा। पर अब रोज़ा से मिलने की ललक, हर क्षण बढ़ रही थी। रोज़ा ही एक मात्र ऐसी थी जिसने उसे एक नाम दिया था और जिसने बिना किसी नियम–कानून का हवाला दिए उससे इतनी आत्मीय बातें करीं थीं।

रात को जब बाकी मधुमक्खियां खर्राटें ले रहीं थीं वो अपने आपको काफी अकेला महसूस कर रहा था। दुख यह था कि वह अपनी भावनाएं, खुद अपने आप तक से व्यक्त नहीं कर पा रहा था। वह अपने आप को बेगाना महसूस कर रहा था।

आखिरकार, यह जानते हुए भी कि वह गलत कर रहा है फिर भी वो अपने आप को रोक नहीं सका। एक दिन पौना घंटे उसने इतनी मेहनत की जितनी उसने पहले कभी नहीं करी थी। उसने 299 फूलों से पराग चुना। फिर एकदम थक कर होने के बाद उसने रोज़ा से अंदर आने की इज़ाज़त मांगी।

''हां, हां, आराम से अंदर आओ,'' रोज़ा ने अपनी चंचल आवाज़ में कहा, ''मुझे मालूम था कि एक दिन तुम ज़रूर मुझ से दुबारा मिलने आओगे।''

थकान के कारण बॉबी काफी देर तक कुछ नहीं बोला। वो शांत होकर गुलाब की खुशबूदार पंखुड़ियों में लेटा रहा।

पांच मिनट की अलौकिक शांति के बाद उसने कहा, ''सचमुच आज मुझे पहली बार यह मालूम पड़ा है कि आराम क्या होता है।''

''तुम अब कभी भी पहले जैसे नहीं रह सकोगे,'' रोज़ा ने हल्के से कहा।

''मुझे तुम्हारी खुशबू पसंद है,'' बॉबी उसकी चापलूसी नहीं करना चाहता था। उसे रोज़ा की सुगंध सबसे अधिक खुशबूदार लगी। शायद पहली बार किसी खुशबू ने उसका ध्यान आकर्षित किया था।

''एक बार तुम्हें सुंदरता का भास हो गया तो फिर तुम दुबारा अपने छत्ते में नहीं रह पाओगे। सुंदरता किसी नियम–कानून से नहीं बंधी होती है। सुंदरता की खोज में तुम्हें आजीवन अकेले ही सफर करना पड़ेगा,'' रोज़ा ने कहा।

बॉबी को रोज़ा की बातें समझ में नहीं आ रहीं थीं। उसे सिर्फ इतना पता था कि वह अपने जीवन में पहली बार खुश था।

''रोज़ा मेरे जीवन का एक मात्र उद्देश्य है उपयोगी होना।''

''नहीं। जीवन का अगर कोई सार्थक उद्देश्य है तो वह है खुशियां लाना,'' रोज़ा ने कहा।

''हम जीवन में खुशी कैसे ला सकते हैं?''

''एक–दूसरे का ध्यान रखकर और एक–दूसरे के दुख–दर्द में हाथ बंटा कर। किसी को उसका अपना प्यारा सा नाम देकर।''

''मधुमक्खियां किसी की परवाह नहीं करती हैं,'' बॉबी ने दुखी

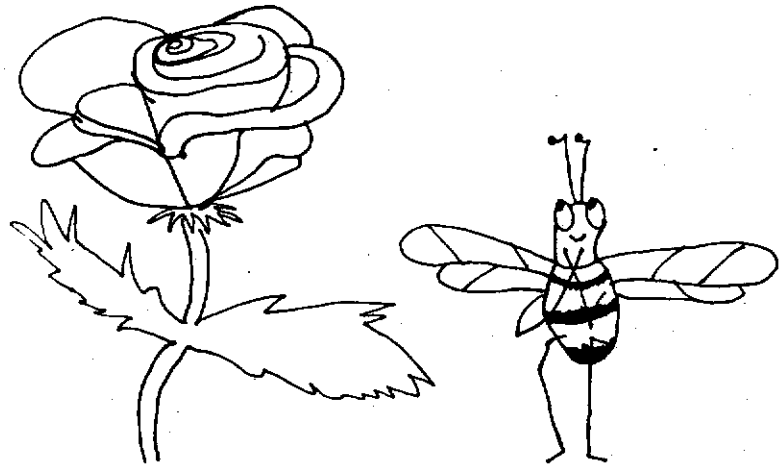

होकर कहा, ''जब किसी दूसरे छत्ते पर आक्रमण हो रहा होता है तो भी हम उनकी मदद के लिए नहीं जाते हैं। हम अपने बीमार और अपंग सदस्यों को छत्ते के बाहर रात की ठंड में मरने के लिए फेंक देते हैं।''

''फिर तुम किसके लिए उपयोगी हो?''

''मुझे नहीं मालूम,'' बॉबी ने कहा, ''हमें आगाह किया गया था कि यब सवाल हम कभी नहीं पूछें।''

''तुम चुपचाप लेटो,'' रोज़ा ने कहा, ''मैं तुम्हें प्यार करूंगी और तुम्हारी देखभाल करूंगी।''

तभी बॉबी को ध्यान आया कि उसका घंटा पूरा होने जा रहा है। वो इन सुखद क्षणों को छोड़कर छत्ते की ओर उड़ा।

''कितने फूलों का पराग?'' दरबान ने पूछा।

''299 नहीं 300,'' बॉबी को रोज़ा की याद आई। उसने रोज़ा से भी कुछ पराग लिया था। बाकी सब अनाम फूलों के साथ में उसे रोज़ा के नाम को जोड़ना अन्यायपूर्ण लगा। उसने अपने आपको संभालते हुए कहा। ''मेरी पहले वाली संख्या ठीक थी।''

दरबान बॉबी की हिचकिचाहट को ताड़ गया। उसने तुरंत सिपाहियों को बुलाकर उसे गिरफ्तार करवाया। बॉबी उनमें से नहीं था जो हिसाब–किताब में गल्ती करे।

बॉबी की कोर्ट में पेशी हुई। मुखिया जज था। उसका चेहरा बहुत भयानक लग रहा था।

''मेरी दयालुता को तुमने इस प्रकार चुकाया। हमें शक है कि तुम किसी दुश्मन से जा मिले हो,'' वो गुर्राया।

''रोज़ा कोई दुश्मन नहीं है। वो तो एक सुंदर फूल है।''

''अच्छा तुम स्वीकार कर रहे हो कि तुम एक फूल से बातचीत कर रहे थे।''

''जो कोई भी हमारे नियम–कानूनों को नहीं मानता है वो हमारा दुश्मन है। जो कोई मधुमक्खी के उपयोगी होने में दखलंदाज़ी करता है वो हमारा दुश्मन है।''

''प्यार,'' बॉबी चिल्लाया, ''उपयोगिता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण और ऊंचा है।''

कोर्ट में मौज़ूद सभी मधुमक्खियों ने ''प्यार'' शब्द सुनते ही अपने कानों को हाथों से ढंक लिया।

''तुम अछूत हो,'' मुखिया ने कहा।

''एक ऐसा समय था जब प्यार और खुशी जैसे शब्दों से मुझे डर लगता था। मेरी आंखों के सामने सिपाहियों ने 19/201 को कत्ल

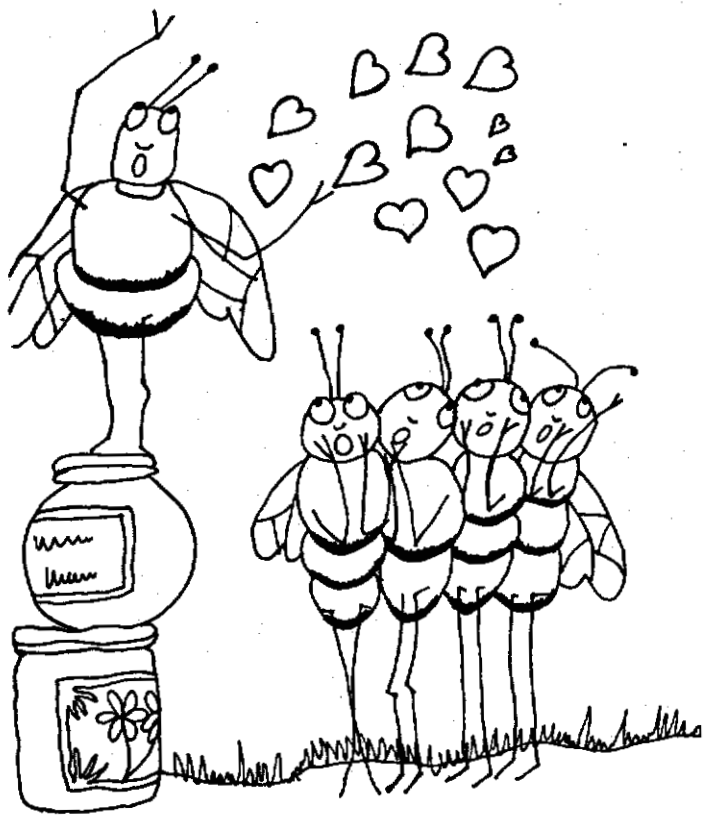

किया। वो मेरा दोस्त था फिर भी मैंने उसको बचाने के लिए अपनी उंगली तक नहीं उठाई।''

''चुप रहो!'' मुखिया चिल्लाया।

''नहीं, मैं चुप नहीं रहूंगा,'' बॉबी ने अपनी आवाज़ को तेज़ करते हुए कहा, ''अगर छत्ते में थोड़ी भी बदल हुई तो वहां एकदम अनर्थ हो जाएगा। तब हम लोग ड्यूटी भूल जाएंगे और अन्य मधुमक्खियों की खातिर अपनी जान कुर्बान करने को तैयार नहीं होंगे। हम इंसानों जैसे ही अपने सदस्यों का मारने–काटने लगेंगे।''

''प्यार की एक चिंगारी के लिए मुझे यह सब अनर्थ मंजूर है।''

बॉबी के बयान के बाद पूरे छत्ते में हलचल मच गई। ऐसा लगता था कि जैसे ''प्यार'' शब्द ने छत्ते में, धुएं से भी ज़्यादा हलचल मचा दी हो।

सिपाही अपने हथियारों के साथ बॉबी की ओर बढ़ने लगे। हर बार जब उन्होंने बॉबी पर वार करना चाहा तो उसने ज़ोर–ज़ोर से ''प्यार–प्यार'' चिल्लाया और तब सिपाहियों ने हथियार फेंक कर अपने कानों को दोनों हाथों से ढंक लिया। वे बॉबी को नहीं मार पाए क्योंकि उनकी सारी उर्जा खुद को बचाने में लग गई।

बॉबी ''प्यार–प्यार'' का नारा लगाता हुआ पूरे छत्ते में घूमा। मुख्य दरवाज़े पर मुखिया अपने हाथों से कानों को बंद करके खड़ा था। उसने कहा :

''तुम हमारे बिना ज़िंदा नहीं रह पाओगे 15/753 । तुम्हें मालूम है कि हम जो कुछ भी कर रहे थे वो ठीक था। हमारे बिना तुम मर जाओगे।''

बॉबी भी उसपर चिल्लाया, ''तुम सब तो ज़िंदा होकर भी मुर्दा हो। अगर मैं आज मर भी गया तो कुछ देर ज़िंदा रहने के बाद ही मरूंगा।''

यह कह कर बॉबी रोज़ा से मिलने चला।

वो अपने आपको खोया–खोया और अकेला महसूस कर रहा था। फिर भी वो आज पहली बार अपने आपको ज़िंदा महसूस कर रहा था।

''रोज़ा,'' उसने कहा, ''मुझे रात होने के कारण ठंड लग रही है और डर भी लग रहा है।''

रोज़ा ने उसे अपनी खुशबूदार और गर्म पंखुड़ियों में आकर पनाह लेने के लिए आमंत्रित किया।

''बॉबी,'' उसने कहा।

''हां,'' उसने गुलाब के दिल के समीप आते हुए कहा।

''मुझे भी डर लग रहा है।''

''बाकी मधुमक्खियों से तुम बिल्कुल भी न डरना। अगर वो तुम्हें मारने आएं तो तुम सिर्फ 'प्यार–प्यार' का नारा लगाना और वो सब दुम दबा कर भाग जाएंगी।''

''नहीं बॉबी,'' रोज़ा ने फुसफुसाया, ''मुझे मधुमक्खियों से डर नहीं है। वैसे भी अब गर्मी का मौसम लगभग खत्म होने वाला है।''

''फिर?''

''मुझे लगता है कि अब मेरा समय पास आ रहा है,'' रोज़ा ने कहा।

''फिर तो हम अंतिम क्षणों को साथ–साथ गुज़ारेंगे – एक–दूसरे को प्यार करते हुए और एक–दूसरे की देखभाल करते हुए।''

उन्होंनें यही किया। जब सुबह को आसमान में सूरज निकला तो उसकी तेज़ किरणें एक लाल गुलाब पर पड़ीं। गुलाब ज़मीन पर पड़ा था। उसकी सुर्ख पंखुड़ियों में एक मरी हुई मधुमक्खी लिपटी थी।